

स्पर्श टंकण पद्धति

स्पर्श टंकण पद्धति के अंतर्गत एक टंकक बिना कुँजीपटल की ओर देखे मात्र कुँजियों को स्पर्श करके टंकण कार्य करता है। इस पद्धति में टंकक को एक कुँजी से दूसरी कुँजी की दूरी तथा दिशा का ज्ञान कराया जाता है। साथ-ही-साथ अभ्यास के दौरान प्रत्येक अंगुली के लिए कुछ कुँजियाँ निर्धारित की जाती हैं।

देवनागरी कुँजीपटल में स्पर्श टंकण की वही पद्धति अपनाई जाती है, जो रोमन लिपि के कुँजीपटल में प्रयोग की जाती है। उल्लेखनीय है कि यह व्यवस्था लिपि में अक्षरों की आवृत्ति के अनुसार निर्धारित की गई है। स्पर्श टंकण की विभिन्न पद्धतियों की प्रकृति अलग-अलग हो सकती है, लेकिन इन सब में महत्वपूर्ण यह है कि किसी भी पद्धति में प्रत्येक अंगुली द्वारा केवल उन्हीं कुँजियों का प्रयोग किया जाएगा, जो उसके लिए निर्धारित की गई हैं। स्पर्श टंकण पद्धति कुँजीपटल के भौतिक स्वरूप पर आधारित होती है। इसमें इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि आप रोमन कुँजीपटल, इनस्क्रिप्ट कुँजीपटल अथवा टाइपराइटर कुँजीपटल का प्रयोग कर रहे हैं। अतः जो व्यक्ति पहले से अंग्रेजी टंकण जानता है, वह कुँजीपटल पर अक्षरों की व्यवस्था का सघन अभ्यास करके देवनागरी कुँजीपटल में दक्षता प्राप्त कर सकता है।

स्पर्श टंकण पद्धति के अंतर्गत कुँजीपटल को दायाँ और बायाँ दो भागों में बाँटा गया है, जो क्रमशः दाएँ और बाएँ हाथ से प्रयोग किए जाते हैं। कुँजियों को दबाने के लिए प्रत्येक हाथ की केवल चार-चार अंगुलियों का प्रयोग किया जाता है। दाएँ हाथ का अंगूठा स्पेस-बार को दबाने के लिए प्रयोग किया जाता है। स्पर्श टंकण पद्धति में बाएँ हाथ के अंगूठे का कोई उपयोग नहीं होता है।

स्पर्श टंकण पद्धति के अंतर्गत मूल रूप से कुँजीपटल के नीचे की तीन पंक्तियों का ही अभ्यास किया जाता है। सबसे ऊपर की चौथी पंक्ति का विशेष अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं होती है। इस पंक्ति में प्रायः ऐसे अंक और चिह्न होते हैं, जिनकी आवृत्ति बहुत कम होती है। जब हम किसी एक अंगुली से कुँजी को दबा रहे होते हैं तो दूसरे हाथ की चार अंगुलियाँ अपनी 'होम-कीज' पर रहती हैं। कुँजीपटल पर प्रत्येक कुँजी को दबाने के लिए एक अंगुली निर्धारित की गई है। किसी भी कुँजी को दबाने के बाद प्रत्येक अंगुली अपनी 'होम-कीज' पर लौट आती है। दोनों हाथों के अंगूठे के साथ वाली अंगुलियाँ (तर्जनी) सर्वाधिक सक्रिय होती हैं, उनके लिए दो-दो कॉलम निर्धारित किए गए हैं। इन दोनों कॉलमों पर सर्वाधिक आवृत्ति वाले अक्षर मौजूद होते हैं। हाथों की सबसे लंबी अंगुलियों (मध्यमा) के लिए एक-एक कॉलम निर्धारित किया गया है, क्योंकि ये अंगुलियाँ सिर्फ सीधी दिशा में चल सकती हैं। दोनों हाथों की तीसरी अंगुलियों (अनामिका) के लिए भी एक कॉलम ही निर्धारित किया गया है, क्योंकि इन पर मौजूद अक्षरों की आवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती है। चौथी अंगुलियाँ अर्थात् हाथों की सबसे छोटी अंगुलियाँ (कनिष्ठा) उन कुँजियों पर सक्रिय होती हैं, जिन पर मौजूद अक्षरों का प्रयोग लिपि में सबसे कम होता है। यद्यपि दाएँ हाथ की सबसे छोटी अंगुली को कुँजियों के

अधिक कॉलम संभालने होते हैं, फिर भी यह अंगुली निर्धारित सभी कुँजियों पर समान दक्षता से कार्य करती है।

कुँजीपटल पर विद्यमान Shift कुँजियाँ किसी कुँजी के शिफ्ट अक्षर को छापने के काम आती हैं। बिना शिफ्ट के छपने वाले अक्षरों को Lower Case एवं शिफ्ट के साथ छपने वाले अक्षरों को Upper Case कहा जाता है। Upper Case के अक्षरों को छापने से पहले शिफ्ट कुँजी को दबाना होता है और अक्षर वाली कुँजी को दबाने के बाद ही शिफ्ट कुँजी को छोड़ा जाता है। यदि आप दाएँ हाथ से कुँजी को दबाना चाहते हैं तो बाईं ओर की शिफ्ट कुँजी को दबाएँ। इसी प्रकार बाएँ हाथ के अक्षर वाली कुँजी के लिए दाएँ हाथ की शिफ्ट कुँजी दबाई जाती है। शिफ्ट कुँजी को दबाने के लिए दोनों हाथों की सबसे छोटी अंगुलियों का प्रयोग किया जाता है।

कुँजीपटल के अभ्यास हेतु ध्यान देने योग्य तथ्य

आप किसी भी भाषा के और किसी भी कुँजीपटल पर अभ्यास करें, शुद्धता बनाए रखने तथा गति बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है ताकि आप न केवल न्यूनतम समय में अधिकतम गति प्राप्त कर सकें, अपितु अधिकाधिक शुद्धता से भी टाइप कर सकें :

1. कभी-भी कुँजीपटल की ओर देखकर टाइप न करें।
2. जिस पंक्ति का अभ्यास कर रहे हों, उससे संबंधित अभ्यास पृष्ठ को खोलकर मेज़ पर रखें और आँखें उन्हीं शब्दों पर टिकी रहें, जिन्हें आप टाइप कर रहे हैं।
3. एक पंक्ति में एक ही शब्द को बार-बार टाइप करें। इससे अंगुलियाँ बार-बार एक ही कुँजी से दूसरी कुँजी तक जाएगी। इस प्रक्रिया से आपको कुँजियों की दिशा तथा दूरी याद हो जाएगी।
4. अभ्यास-1 होम-कीज़ से संबंधित है, अतः इसका अभ्यास करने में अधिक समय दें।
5. जब तक आपको यह आत्मविश्वास न हो जाए कि आपकी अंगुलियाँ कुँजियों पर अच्छी तरह से सैट हो गई हैं, तब तक उसी पंक्ति का अभ्यास करते रहें।
6. जब आप ड्रिल पर आधारित शब्दों को शुद्ध-शुद्ध टाइप करने लग जाएँ तभी अगली पंक्ति का अभ्यास प्रारंभ करें।
7. कुँजीपटल का अभ्यास पूरा हो जाने के बाद ही गति बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
8. गति बढ़ाने से संबंधित निर्देश गति अभ्यासों से पूर्व दिए गए हैं।